पाठ 22

1. क्या परमेश्वर सदोम और अमोरा के लोगों की दुष्टता के बारे में जानता था?

-हां।

2. अगर लोग परमेश्वर को भूल जाते हैं, तो क्या वह उन्हें भूल जाएगा?

-नहीं।

3. यदि लोग परमेश्वर को भूल जाते हैं, तो क्या वह उनके पापों को भूल जाएगा?

-नहीं।

4. परमेश्वर को हर पाप की सजा क्यों देनी चाहिए?

-क्योंकि ईश्वर पूर्ण है।

-क्योंकि परमेश्वर ने लोगों को परिपूर्ण बनाया है।

-क्योंकि हर पाप परमेश्वर के खिलाफ है।

5. परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के लोगों को उनके पापों के लिए तुरंत दण्ड क्यों नहीं दिया?

-क्योंकि परमेश्वर चाहता था कि वे अपने पापों का पश्चाताप करें।

-क्योंकि परमेश्वर उन्हें बचाना चाहते थे।

6. परमेश्वर आज लोगों को उनके पापों के लिए तुरंत दण्ड क्यों नहीं देता?

-क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि वे अपने पापों का पश्चाताप करें।

-क्योंकि परमेश्वर उन्हें बचाना चाहते हैं।

7. क्या परमेश्वर केवल लोगों को धमकाता है, लेकिन उन्हें उनके पापों की सजा नहीं देता है?

-नहीं।

-परमेश्वर सभी पापों की सजा देंगे।

8. जब परमेश्वर के पास पापियों को दण्ड देने का समय आता है, तो क्या कोई परमेश्वर को रोक सकता है?

-नहीं।

9. जैसे पाप ने लूत को सदोम में खींच लिया, वैसे ही पाप सभी लोगों के साथ क्या करता है?

-पाप लोगों को अपनी दुष्टता के करीब और करीब लाता है।

10. हम सदोम और अमोरा के लोगों की तरह कैसे हैं?

-हमने बहुत से झूठ बोले हैं।

-हमने दूसरे लोगों पर झूठा आरोप लगाया है।

- हमने अपने पड़ोसियों को शाप दिया है।

-हमने चोरी की है जो दूसरे लोगों का है।

-हम अन्य पुरुषों की पत्नियों के साथ सोए हैं।

-हमने दूसरों को मार डाला है।

11. परमेश्वर ने लूत को क्यों बचाया?

-क्योंकि लूत जानता था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-क्योंकि लूत जानता था कि उसका पाप अनन्त मृत्यु लाता है।

-क्योंकि लूत जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-क्योंकि लूत को विश्वास था कि परमेश्वर उसे बचाने के लिए उद्धारकर्ता को भेजेगा।

12. परमेश्वर ने लूत की पत्नी को नमक के खम्भे में क्यों बदल दिया?

- क्योंकि लूत की पत्नी ने परमेश्वर की अवज्ञा की, और पीछे मुड़कर देखा।

13. लूत की पत्नी ने पीछे मुड़कर क्यों देखा?

-क्योंकि वह अपने पाप से प्यार करती थी।

-क्योंकि वह अपना पाप नहीं छोड़ना चाहती थी।

-परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को एक बेटा देने का वादा किया था।

-इब्राहीम 100 साल का था, और सारा 90 साल की थी, फिर भी उनकी कोई संतान नहीं थी।

-क्या परमेश्वर इब्राहीम को एक पुत्र देने का अपना वादा भूल गया?

-नहीं।

-परमेश्वर अपने वादों को नहीं भूल सकते।

-परमेश्वर हमेशा अपने वादे रखता है।

-क्या इब्राहीम को एक पुत्र देने के लिए परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया?

-नहीं।

-परमेश्वर अपना मन नहीं बदल सकते।

-परमेश्वर हमेशा वही करता है जो वह कहता है कि वह करेगा।

-इब्राहीम 100 साल का था, और सारा 90 साल की और बांझ थी।

-क्या परमेश्वर के लिए अब्राहम और सारा को एक पुत्र देना बहुत कठिन था?

-नहीं।

-परमेश्वर के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है।

-परमेश्वर कुछ भी कर सकते हैं।

-जैसे ही परमेश्वर ने वचन दिया, उसने अब्राहम और सारा को एक पुत्र दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 21:1-3

1 अब यहोवा ने सारा पर अनुग्रह किया, जैसा उस ने कहा या, और यहोवा ने सारा के लिथे वह किया जो उस ने वचन दिया था।

2-सारा गर्भवती हुई और उसने इब्राहीम के बुढ़ापे में एक पुत्र को जन्म दिया, जिस समय परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की थी।

3-इब्राहीम ने सारा के जिस पुत्र को जन्म दिया, उसका नाम इसहाक रखा।

- इब्राहीम, जो 100 वर्ष का था, और सारा, जो 90 वर्ष की और बांझ थी, एक पुत्र कैसे उत्पन्न कर सकती थी?

-क्योंकि जीवन देने वाला ईश्वर है।

-क्योंकि परमेश्वर कुछ भी कर सकते हैं।

-उस पुत्र का क्या नाम था जिसे परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को दिया था?

-इसहाक।

-कई सालों के बाद, इसहाक एक मजबूत युवक बन गया।

-अब्राहम और सारा इसहाक से बहुत प्यार करते थे।

-क्या इब्राहीम को पता था कि परमेश्वर ने इसहाक की लाइन के माध्यम से उद्धारकर्ता को लाने की योजना बनाई थी?

-हां।

-इब्राहीम ने इसहाक की पंक्ति के माध्यम से उद्धारकर्ता को लाने के लिए परमेश्वर के वादे को याद किया।

-एक दिन, परमेश्वर ने इब्राहीम से इसहाक के बारे में बात की।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:1-2

1-कुछ समय बाद परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली। उसने उससे कहा, “इब्राहीम!” "यहाँ मैं हूँ," अब्राहम ने उत्तर दिया।

2-तब परमेश्वर ने कहा, अपने पुत्र, अपने एकलौते पुत्र, इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, लेकर मोरिय्याह के देश में चला जा। वहाँ उसका एक

पर्वत पर होमबलि के रूप में बलिदान करना, जिसके बारे में मैं तुम्हें बताऊँगा।"

- परमेश्वर ने अब्राहम को इसहाक की बलि देने की आज्ञा क्यों दी?

-परमेश्वर अब्राहम की परीक्षा लेना चाहता था।

-परमेश्वर अब्राहम की परीक्षा क्यों लेना चाहता था?

-परमेश्वर देखना चाहता था कि क्या इब्राहीम इसहाक से ज्यादा परमेश्वर से प्यार करता है।

- परमेश्वर अब्राहम को इसहाक की बलि देने की आज्ञा कैसे दे सकता है?

-क्योंकि परमेश्वर ने इब्राहीम को जीवन दिया।

-क्योंकि परमेश्वर ने इसहाक को जीवन दिया।

-क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों के परमेश्वर हैं।

-क्या आपका पड़ोसी आपकी पत्नी को बताता है कि क्या करना है?

-नहीं।

-क्यों?

-क्योंकि तुम्हारा पड़ोसी तुम्हारी पत्नी का स्वामी नहीं है।

-क्या आपका पड़ोसी तय करता है कि आपके खेतों को कैसे लगाया जाए?

-नहीं।

-क्यों?

-क्योंकि तुम्हारा पड़ोसी तुम्हारे खेतों का स्वामी नहीं है।

-इब्राहीम का परमेश्वर कौन था?

-परमेश्वर।

- सभी लोगों का परमेश्वर कौन है?

-परमेश्वर।

-क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों का प्रभु है, परमेश्वर लोगों को वह करने की आज्ञा दे सकता है जो वह चाहता है।

-जब परमेश्वर ने अब्राहम को इसहाक की बलि देने की आज्ञा दी, तो अब्राहम ने क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:3

3-अगले सवेरे इब्राहीम ने उठकर अपने गदहे पर काठी कसी। वह अपने दो सेवकों और अपने पुत्र इसहाक को अपने साथ ले गया। जब वह होमबलि के लिये पर्याप्त लकड़ियां काट चुका, तब उस स्थान की ओर चल पड़ा, जिसके विषय में परमेश्वर ने उस से कहा था।

-इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ी काटी, और इसहाक और उसके दो सेवकों को उस स्थान पर ले गया जहाँ परमेश्वर उसे दिखाएगा।

-इब्राहीम इसहाक की बलि कैसे दे सकता था?

-अगर इब्राहीम ने इसहाक की बलि दी, तो परमेश्वर अपने वादों को कैसे पूरा करेगा?

-अगर इब्राहीम ने इसहाक की बलि दी, तो परमेश्वर अब्राहम को कितने वंशज देगा?

-यदि इब्राहीम ने इसहाक का बलिदान किया, तो परमेश्वर कैसे उद्धारकर्ता को अब्राहम के वंशज के रूप में भेजेगा?

-परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था कि इसहाक कई वंशजों का पिता होगा, और उद्धारकर्ता उसका वंशज होगा।

-क्या परमेश्वर ने अपना मन बदल दिया?

-नहीं।

-क्या परमेश्वर ने अपने वादों को तोड़ने का फैसला किया?

-नहीं।

-क्या अब्राहम ने सोचा था कि परमेश्वर ने अपना मन बदल दिया है?

-नहीं।

-अब्राहम परमेश्वर और उनके वादों में विश्वास करता था।

-अब्राहम का मानना था कि परमेश्वर अपने वादों को पूरा करेगा।

-अब्राहम का मानना था कि परमेश्वर उसे कई वंशज देने का अपना वादा निभाएंगे।

-अब्राहम का मानना था कि परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने का अपना वादा निभाएंगे।

- इब्राहीम को क्या विश्वास था कि अगर वह इसहाक की बलि चढ़ाएगा तो परमेश्वर क्या करेगा?

-अब्राहम का मानना था कि अगर उसने इसहाक की बलि दी, तो परमेश्वर इसहाक को मरे हुओं में से जिलाएगा।

-अब्राहम का विश्वास आदम और हव्वा के विश्वास से भिन्न था।

-ईडन गार्डन में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि अगर वे अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ से खाएंगे तो वे मर जाएंगे।

-आदम और हव्वा ने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया।

-लेकिन इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया।

-क्योंकि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, वह इसहाक और उसके दो सेवकों को उस स्थान पर ले गया जहां परमेश्वर उन्हें दिखाएगा।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:4-6क

4-तीसरे दिन इब्राहीम ने ऊपर देखा और वह स्थान दूर से देखा।

5-उसने अपने सेवकों से कहा, “जब तक मैं और लड़का वहाँ जाते हैं, तब तक गदही के साथ यहीं रहना। हम इबादत करेंगे और फिर तेरे पास लौट आएंगे।”

6 और इब्राहीम ने होमबलि के लिथे लकड़ी लेकर अपके पुत्र इसहाक पर धर दी, और आग और छुरी वह ही उठा ले गया।

- जैसे इब्राहीम और इसहाक एक साथ चल रहे थे, इसहाक ने अपने पिता से एक प्रश्न पूछा।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:6ख-7

6-जैसे-जैसे वे दोनों साथ-साथ चले,

7 इसहाक ने अपके पिता इब्राहीम से कहा, हे पिता? "हाँ बेटा?" अब्राहम ने उत्तर दिया। इसहाक ने कहा, "आग और लकड़ी तो यहां हैं, परन्तु होमबलि का मेम्ना कहां है?"

-इसहाक का सवाल क्या था?

- "बलिदान के लिए मेमना कहाँ है?"

-इसहाक जानता था कि उसके पिता बलिदान देने जा रहे हैं।

-इसहाक जानता था कि वे आग और लकड़ी ले जा रहे हैं।

- फिर भी इसहाक को समझ नहीं आया कि वे अपने साथ एक मेमना क्यों नहीं ले गए।

-इब्राहीम ने इसहाक को क्या उत्तर दिया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:8

8- इब्राहीम ने उत्तर दिया, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि के लिये मेम्ना स्वयं ही देगा। और दोनों साथ चलते रहे।

- अब्राहम का क्या जवाब था?

-इब्राहीम ने कहा कि मेमने को परमेश्वर खुद मुहैया कराएंगे।

-अब्राहम का मानना था कि परमेश्वर एक बलिदान प्रदान करेंगे।

-ईश्वर पर विश्वास करना सबसे महत्वपूर्ण कार्य है जो हम कभी भी कर सकते हैं।

-केवल परमेश्वर का संदेश सुनने से हम नहीं बचेंगे।

-हमें परमेश्वर के संदेश को बचाने के लिए विश्वास करना चाहिए।

-यहाँ एक दृष्टांत है:

-एक आदमी जो बहुत बीमार था डॉक्टर के पास गया।

-डॉक्टर ने बीमार व्यक्ति को देखा और उसे अपनी बीमारी बताई।

-फिर, डॉक्टर ने बीमार व्यक्ति को वह दवा दी जो उसे फिर से स्वस्थ होने के लिए चाहिए थी।

- बीमार आदमी ने दवा ली, दवा अपनी जेब में रखी और घर वापस चला गया।

-लेकिन, बीमार आदमी ने कभी दवा नहीं निगली।

-बीमार आदमी ने सिर्फ डॉक्टर की सुनी थी।

- उसने दवा नहीं निगली।

- क्या बीमार आदमी ठीक हो जाएगा?

-नहीं।

-केवल परमेश्वर का संदेश सुनने से आप नहीं बचेंगे।

-आपको इब्राहीम की तरह परमेश्वर के संदेश पर विश्वास करना चाहिए।

-यदि आप केवल ईश्वर का संदेश सुनते हैं, लेकिन विश्वास नहीं करते हैं, तो आप शैतान के समान हैं।

-यदि आप केवल परमेश्वर का संदेश सुनते हैं, लेकिन विश्वास नहीं करते हैं, तो आप परमेश्वर को झूठा कह रहे हैं।

-परमेश्वर केवल उन्हें बचाता है जो उस पर विश्वास करते हैं।

-परमेश्वर केवल उन्हीं को बचाता है जो उसके वचन पर विश्वास करते हैं।

-परमेश्वर का वचन कहाँ है?

-परमेश्वर की किताब, बाइबिल में।

-जब इब्राहीम और इसहाक उस स्थान पर पहुँचे जहाँ परमेश्वर ने उन्हें दिखाया, तो क्या हुआ?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:9-10

9-जब वे उस स्थान पर पहुंचे, जिसके विषय में परमेश्वर ने उस से कहा या, तब इब्राहीम ने वहां एक वेदी बनाई, और उस पर लकडिय़ां रखी। उस ने अपके पुत्र इसहाक को बान्धकर वेदी पर लकड़ी के ऊपर लिटा दिया।

10-तब उसने हाथ बढ़ाकर अपने पुत्र को घात करने के लिए चाकू ले लिया।

- अब्राहम ने क्या किया?

-उसने इसहाक को बान्धकर वेदी पर लिटा दिया।

-क्या इब्राहीम इसहाक को बचाने में सक्षम था?

-नहीं।

-इब्राहीम इसहाक को बचाने में सक्षम क्यों नहीं था?

-क्योंकि इब्राहीम ने इसहाक की बलि देने के लिए अपना चाकू पहले ही उठा लिया था।

-क्या इसहाक खुद को बचाने में सक्षम था?

-नहीं।

-इसहाक खुद को क्यों नहीं बचा पाया?

-क्योंकि अब्राहम ने इसहाक के हाथ-पैर बांधे थे।

-इसहाक भागने में सक्षम नहीं था।

-जब परमेश्वर ने बाढ़ भेजी, तो नाव के बाहर बंद लोग बच नहीं पाए।

- जब परमेश्वर ने स्वर्ग से आग भेजी, तो सदोम और अमोरा के लोग बच नहीं पाए।

- जब लूत की पत्नी ने पीछे मुड़कर सदोम नगर की ओर देखा, तो वह बच न सकी।

-कोई बच नहीं पाता।

- कौन अकेला इसहाक को बचाने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-क्या दूसरे लोग हमें बचा सकते हैं?

-नहीं।

-क्या हम खुद को बचा पा रहे हैं?

-नहीं।

- एकमात्र कौन है जो हमें बचाने में सक्षम है?

-परमेश्वर।

-केवल परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को बचाया।

- अकेले परमेश्वर ने लूत और उसकी दो बेटियों को बचाया।

-परमेश्वर ही सभी लोगों को बचाने में सक्षम है।

-परमेश्वर ही इसहाक को बचाने में सक्षम थे।

-क्या परमेश्वर ने इसहाक को बचाया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:11-12

11-परन्तु यहोवा के दूत ने उसे स्वर्ग से पुकार कर कहा, हे इब्राहीम! इब्राहीम!" "यहाँ मैं हूँ," अब्राहम ने उत्तर दिया।

12- "लड़के पर हाथ मत रखना," उसने कहा। "उसके लिए कुछ मत करो। अब मैं जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है, क्योंकि तू ने अपके पुत्र, अर्यात् अपने एकलौते पुत्र को मुझ से दूर नहीं रखा।”

-किसने इब्राहीम से बात की और इसहाक को बचाया?

-परमेश्वर।

-अकेले परमेश्वर ने इब्राहीम को इसहाक को मारने से रोक दिया।

-परमेश्वर ने अकेले इसहाक को बचाया।

-लेकिन इसहाक को तब तक नहीं बचाया जा सकता था जब तक कि कोई और बलिदान न हो।

-क्या अब्राहम के पास एक और बलिदान था?

-नहीं।

-क्या इसहाक के पास एक और बलिदान था?

-नहीं।

- परमेश्वर ने क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:13

13-इब्राहीम ने ऊपर देखा, और वहाँ एक घने में उसने एक मेढ़े को उसके सींगों से पकड़ा हुआ देखा। तब उसने जाकर उस मेढ़े को ले लिया, और अपके पुत्र के स्थान पर होमबलि के लिये बलिदान किया।

-अब्राहम के पास दूसरा बलिदान नहीं था।

-इसहाक के पास दूसरा बलिदान नहीं था।

-इसहाक की जगह लेने के लिए किसने बलिदान दिया?

-परमेश्वर।

- अकेले परमेश्वर ने बलिदान प्रदान किया।

- परमेश्वर ने क्या बलिदान दिया था?

-एक राम।

- राम कहाँ था?

- इसके सींगों द्वारा एक झाड़ी में धारण किया जाता है।

- मेढ़े को उसके सींगों से झाड़ी में क्यों रखा गया था?

-क्योंकि परमेश्वर ने राम को बांध दिया।

- परमेश्वर ने मेढ़े को उसके सींगों से क्यों बांधा?

-क्योंकि इसहाक की जगह लेने के लिए परमेश्वर केवल एक सिद्ध बलिदान को ही स्वीकार करेगा।

- अगर मेढ़े को उसके सिर या पैरों से बांधा जाता तो वह खुद को छुड़ाने के प्रयास में घायल हो जाता।

-परमेश्वर परिपूर्ण है।

-परमेश्वर केवल एक पूर्ण बलिदान स्वीकार करेंगे।

-अब्राहम ने इसहाक को खोल दिया, और उस मेढ़े को बांध दिया जिसे परमेश्वर ने वेदी पर प्रदान किया था।

-इब्राहीम ने इसहाक के बजाय मेढ़े की बलि दी।

- इसहाक के बजाय मेढ़े की मृत्यु हो गई।

- राम इसहाक का विकल्प था।

-इब्राहीम ने उस स्थान को क्या कहा जहां परमेश्वर ने राम प्रदान किया था?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 22:14-19

14-तब इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा रखा करेगा। और आज के दिन तक यह कहा जाता है, कि यहोवा के पर्वत पर उसकी सेवा की जाएगी।

15-यहोवा के दूत ने दूसरी बार इब्राहीम को स्वर्ग से पुकारा

16 और कहा, यहोवा की यह वाणी है, मैं अपक्की शपय खाकर कहता हूं, कि तू ने ऐसा किया है, और अपके एकलौते पुत्र अपके पुत्र को न रखा है,

17-मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा, और तेरे वंश को आकाश के तारोंके समान और समुद्र के किनारे की बालू के समान असंख्य कर दूंगा। तेरे वंश अपने शत्रुओं के नगरों पर अधिकार कर लेंगे,

18 और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियां आशीष पाएंगी, क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।”

19 तब इब्राहीम अपके सेवकोंके पास लौट आया, और वे बेर्शेबा के लिथे इकट्ठे हुए। और इब्राहीम बेर्शेबा में रहा।

-अब्राहम ने उस स्थान को बुलाया जहां परमेश्वर ने राम प्रदान किया था, "यहोवा प्रदान करेगा।"

-इब्राहीम ने उस स्थान को "प्रभु प्रदान करेगा" क्यों कहा?

-अब्राहम का मानना था कि जिस तरह परमेश्वर ने राम को प्रदान किया, उसी तरह परमेश्वर एक दिन लोगों को बचाने के लिए उद्धारकर्ता प्रदान करेंगे।